CHETANA
International Journal of Education
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2022 = 6.261

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Research Paper
Received on 11.09.2022
Reviewed on 18.09.2022
Accepted on 20.09.2022

कोविड–19 और आधी आबादी– भारत में लैंगिक असमानता के सन्दर्भ में

*डा. शारदा देवी

मुख्य शब्द– *कोरोना महामारी, महिलाएँ, लैगिंक असमानता, विकास, अर्थव्यवस्था, आय, बेरोजगारी, महिला श्रम बाजार आदि।*

सार–संक्षेप

2020 की वैश्विक महामारी ने मानव के सामने कई मानसिक, आर्थिक, सामाजिक और शारीरिक समस्यायें विकराल रूप में खड़ी की। 21 वी सदी में जब दुनिया की आधी आबादी (महिला) को न्याय दिलाने के प्रयास हो रहे थे, कोविड–19 महामारी ने इन प्रयासों को पीछे धकेल दिया। कोई भी युद्ध या महामारी समाज में महिलाओं को ही सबसे अधिक प्रभावित करती है, 2020 में भी ऐसा ही हुआ। विश्व स्तर पर महामारी के दुष्परिणाम समाज के सभी वर्गों को झेलने पड़े लेकिन महिला सबसे ज्यादा पुभावित हुई। भारत में भी इस महामारी ने महिलाओं जैसे कमजोर और हाशिए पर पड़े सामाजिक वर्गों की आजीविका को प्रभावित किया। विकासशील देशों की महिलाओं पर महामारी के दुष्प्रभाव इसलिए भी ज्यादा रहे क्योंकि यहां महिला कई सामाजिक और सांस्कृतिक भेद्भावपूर्ण रीति–रिवाजों से जकड़ी हुई थी। हालांकि लैंगिक समानता का विचार भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों, मौलिक कर्तव्यों और नीति निर्देशक सिद्धातों मेंप्रतिपदित है। संविधान महिलाओं को न केवल समानता का दर्जा प्रदान करता है बल्कि राज्य को लैंगिक समानता स्थापित करने की वैधानिक शक्ति भी देता है। वास्तव में महिला–पुरूष में विशिष्ट जैविक अंतर, विभेद नहीं बल्कि प्रकृति प्रदत विशिष्टताएं हैं जिनमें समाज का सद्भाव और सृजन निहित है।

कोविड–19 से लड़ने के उपायों में लैगिंक असमानता को शामिल नहीं किया गया जबकि भारत में महिलाओं की एक बड़ी आबादी कृषि और उत्पादन के क्षेत्र में स्व रोजगार में शामिल है। लॉकडाउन कीवजह से उनकी आजीविका पर असर पड़ा और उनकी आमदनी कम हुई। प्रस्तुत शोध में कोरोना महामारी के महिलाओं पर हुए दुष्प्रभावों पर व्यापक चर्चा की गई और साथ ही यह समझने की भी कोशिश की गई है कि लैगिंक समानता स्थापित कर तथा अर्थव्यवस्था में उनकी भागीदरी बढ़ा कर ही विकास का बिन्दु प्राप्त कर सकते है।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में लैंगिक असमानता विषय किसी राष्ट्र की सीमाओं में बंधा हुआ नही रहा है, बल्कि इसका स्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय है। वैश्वीकरण एवं उदारीकरण के साथ ही तकनीकी विकास ने सभी सामाजिक विषमताओं को विश्वव्यापी रूप दिया है। शारीरिक संरचना और जैविक कारकों के आधार पर लिंगों के बीच प्राकृतिक अंतर मौजूद है लेकिन जब यही अंतर सांस्कृतिक और सामाजिक तथ्य बन जाताहै तो वह लैंगिक असमानता का रूप ले लेता है। प्रत्येक समाज में स्त्री और पुरूष के रूप में उसकी लैंगिक पहचान और सामाजिक भूमिकाएं तय कर दी जाती है। जैसा कि ***"सिमॉन द बुआ"*** ने 1988 में कहा है कि औरतें पैदा नही की जाती बना दी जाती है। लैंगिक आधार पर महिलाओं के साथ भेदभाव लैंगिक असमानता है जहाँ समाज में महिलाओं को कमजोर वर्ग के रूप में देखा जाता है। युद्ध और प्राकृतिक आपदाओं जैसे संकट महिलाओं और बच्चों को सबसे अधिक प्रभावित करते है। साल 2020 की कोरोना महामारी इसका अपवाद नही हैं कोविड–19 ने पहले से ही मौजूद लिंग संबंधी बाधाओं को गंभीर रूप से बढा दिया है। दिसम्बर 2019 में चीन के वुहान से शुरू हुआ कोविड–19 तेजी से दुनिया के सभी हिस्सों में फैला और 2020 में महामारी का रूप धारण कर लिया। 1930 के दशक के बाद यह सबसे बडा संकट था। जिसने विश्व की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने के साथ ही समाज के सभी वर्गों के जीवन के तौर–तरीकों को बदल दिया। कोरोना महामारी के चलते लगी पाबंदियों की वजह से वैश्विक अर्थव्यवस्था की रफ्तारमंद हुई लेकिन अर्थव्यवस्था के बाकी तमाम हिस्सों के मुकाबले महिला श्रम बाजार पर इसका सबसे बुरा असर पड़ा है। कोविड–19 महामारी के चलते लागू लॉकडाउन ने पूर्णकालिक श्रमबल (खासतौर से महिलाओं) को गिक वर्क की ओर धकेल दिया। इस दौरान महिलाओं पर घरेलु कामकाज और परिवार के सदस्यों के देखभाल की जिम्मेदारी कई गुणा बढ़ गई थी। कोविड–19 महामारी ने दुनिया में मौजूद तमाम असमानताओं को बढ़ा दिया है। गलोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2022 के अनुसार राजनीति में लैंगिक अंतर को काटने में 95 वर्ष लगेंगे जबकि आर्थिक भागीदारी में लैंगिक समानता हासिल करने में 257 वर्ष लगेंगे।

असमानता रिपोर्ट 2022 के मुताबिक महिलाएं वैसे तो आबादी का पचास प्रतिशत हिस्सा होती है लेकिन श्रम करके की गई आमदनी में उनका हिस्सा एक तिहाई ही होता है, जो महिलाएं कामगार वर्ग का हिस्सा बनती है, उन्हें अक्सर असंगठित क्षेत्रा में ही काम मिलता है जहाँ न तो श्रम कानूनों का संरक्षण मिलता है और न ही असंगठित क्षेत्रा बाजार की उठा–पठक से निपटने की ताकत देता है जिससे कामगार महिलाएं गरीबी के ओर भी निचले स्तर तक पहुंच जाती है। महामारी के दौरान बेहतर अवसर न होने पर बहुत से पुरूषों ने असंगठित क्षेत्र का रूख किया था, वही महिलाओं ने तो अपना काम ही छोड़ दिया था, क्योंकि उनके ऊपर घर के काम का बोझ बढ़ गया था और सामाजिक सुरक्षा के ढ़ाँचे की भी कमी थी।

शोध की आवश्यकता और महत्व

समय के साथ समाज में आने वाले बदलावों के कारण सामाजिक विषयों और समस्याओं पर निरन्तर अध्ययन की आवश्यकता रहती है। कोविड–19 महामारी ने समाज के सभी पक्षों को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया। लैंगिक असमानता को दूर कर दुनिया की आधी आबादी को उनके अधिकार दिलाने के जो प्रयास किये जा रहे थे, महामारी ने इन प्रयासों को कई वर्ष पीछे धकेल दिया। इसलिए कोविड–19 से महिलाओं की जिंदगी में आये बदलावों व परिणामों पर अध्ययन की आवश्यकता थी ताकि लैंगिक असमानता को दूर करने के प्रयास किये जा सके।

प्रस्तुत शोध में कोविड–19 महामारी के परिणामस्वरूप महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक स्थिति में आयें परिवर्तनों का अध्ययन किया गया है। न केवल विकासशील बल्कि विकसित राष्ट्रों में भी महामारी ने स्त्रियों की आर्थिक भागीदारी को प्रभावित कर उनके सामने रोजगार का संकट पैदा किया है। प्रस्तुत शोध में महामारी के दुष्परिणामों से महिलाओं की स्थिति को सुधारने के सुझावों पर भी चर्चा की गई है।

शोध का उद्देश्य

- कोविड–19 महामारी के दौरान लैगिंक असमानता बढ़ानें वाले कारको का अध्ययन करना।

- महिलाओं की आर्थिक व सामाजिक स्थिति पर पड़ें दुष्प्रभावों का अध्ययन करना।
- भारतीय महिलाओं के जीवन में आयें बदलावों का अध्ययन करना।
- यह बताने का प्रयास करना कि कोई भी देश विकास का उच्चतम स्तर लैंगिक समानता के बिना प्राप्त नही कर सकता है।

शोध की प्रविधि

शोध अध्ययन के लिए ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक विधियों का प्रयोग किया गया है। द्वितीय आकड़ों का प्रयोग किया गया है जिसमें इस विषय पर प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं, वैश्विक संस्थाओं व भारतीय संस्थाओं द्वारा प्रकाशित विभिन्न रिपोर्ट तथा पुस्तकों में प्रकाशित जानकारियों का प्रयोग किया है।

कोरोना महामारी और वैश्विक महिलाएं

वर्ष 2020 मनुष्य की जिंदगी में कई बड़े बदलाव लेकर आया, वहीं महिलाओं के जीवन को कोरोना ने अधिक प्रभावित किया। संकटकाल में महिलाएं समाज की रीढ़ होती है इसलिए आपदाओं का सबसे अधिक प्रभाव उन्हीं पर पड़ता है। महामारी ने पहले से ही मौजूद लिंग–संबंधी बाधाओं को गंभीर रूप से बढ़ा दिया। विश्व के विभिन्न देशों में कोविड 19 के नियंत्राण के लिए लागू लॉकडाउन के दौरान महिलाओं के खिलाफ हिंसा की घटनाओं में वृद्धि हुई।उभरते वैश्विक आंकड़ों ने लैटिन अमेरिका और कैरिबियन क्षेत्र सहित महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हिंसा हेल्पलाईनों पर कॉल में वृद्धि दिखाई दी। अर्जेंटीना में जहाँ 39 प्रतिशत दैनिक कॉलों की संख्या में वृद्धि हुई वहीं मैक्सिकों में यह वृद्धि 83.53 प्रतिशत तक देखी गई। तालाबंदी के दौरान महिलाओं के प्रति घरेलु हिंसा को लेकर संयुक्त राष्ट्र महासविच एंटोनियो गुटेरेज में दुनिया भर की सरकारों से अपील की कि कोरोना वायरस वैश्विक महामारी से निपटने की कार्यवाही में घरों में महिलाओं की रक्षा को सरकारे प्राथमिकता पर लें। महामारी ने महिलाओं के सामने आजीविका का संकट पैदा कर दिया। कोविड–19 के बाद एकल माताओं का जीवन पहले जैसा नही रहा।

कोविड–19 महामारी के परिणाम केवल जीवन के नुकसान तक ही सीमित नही रहे बल्कि इसके गंभीर सामाजिक–मनोवैज्ञानिक परिणाम निकले। ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2022 में वैश्विक स्तर पर कार्यक्षेत्रा में असमानता को एक उभरता हुआ संकट बताया है। लंबे समय से चल`आ रहे संरचनात्मक बंधन और आर्थिक असमानताओं के साथ ही कोरोना महामारी ने लैंगिक समानता में बाधा उत्पन्न की है। 2022 की ग्लोबल जेंडर रिपोर्ट में बताया गया कि वैश्विक स्तर पर लैंगिक समानता की खाई को पाटने में अभी 132 साल और लगेंगे। जैसे–जैसे कोविड–19 के दुष्परिणाम समाज के सामने आये, महिला शक्ति सबसे अधिक प्रभावित हुई है। WEF ने यह भी नोट किया कि कोविड–19 महामारी के कारण लैंगिक समानता प्राप्त करने की दिशा में प्रगति नकारात्मक रूप से प्रभावित हुई है। महामारी से उत्पन्न मंदी का खामियाजा महिलाओं को भुगतना पड़ा। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने अपने लेख में विश्व भर में महिलाओं के लिए कोविड–19 से उत्पन्न हुई चुनौतियों और उनकी समस्याओं पर चिंता व्यक्त की।

भारत में लैंगिक असमानता

राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक प्रगति के बावजूद महिला को देवी मानने वाले भारतीय समाज में पितृसतात्मक मानसिकता जटिल रूप से व्याप्त है। भारत में आज भी व्यावहारिक स्तर (वैद्यानिक स्तर पर संपति में महिलाओं का समान अधिकार) पर पारिवारिक सम्पत्ति में महिलाओं का अधिकार नही है।राजनीतिक स्तर पर पंचायती राज व्यवस्था को छोड़कर उच्च वैद्यानिक संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था नही है। भारतीय समाज में आज भी यह धारणा विद्यमान है कि पुत्र मुक्तिदाता, बुढ़ापे का सहारा और घर की पूंजी है और पुत्री का जन्म एक दायित्व और कर्जा है। भारत में लैंगिक असमानता समान के हर क्षेत्रा में विद्यमान है। सामाजिक क्षेत्रा में महिलाओं को घरेलू कार्यों के ही अनुकुल माना गया है। आर्थिक क्षेत्रा में प्रायः महिलाओं को पुरूषों के सापेक्ष कम वेतन दिया जाता है। राजनीतिक क्षेत्रा में राजनीतिक दलों द्वारा समानता का ढोल

पीटने के बावजूद न तो चुनावों में महिलाओं को प्रत्याशी बनाते है और न ही प्रमुख पदों पर महिलाओं की नियुक्ति करते है। वैज्ञानिक क्षेत्र में महिलाएँ पुरूषों के मुकाबले ना के बराबर है। शैक्षिक क्षेत्र में हालांकि लड़कियों के नामांकन में वृद्धि हुई है लेकिन उच्च शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा में महिलाएँ पुरूषों की तुलना में बहुत कम है। महिलाओं द्वारा परिवार के खेतों और उद्यमों पर कार्य करने को तथा घरों के भीतर किये गये अवैतनिक कार्यों को सकल घरेलु उत्पाद में नहीं जोडा जाता है।

भारत में लैंगिक असमानता की सच्चाई ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स 2022 में दिखाई देती है। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम द्वारा जारी इस इंडेक्स में भारत 146 देशों की सूची में 135 वे पायदान पर हैं। वहीं इस रिपोर्ट में स्वास्थ्य और उत्तरजीविका के मामलें में भारत को सबसे नीचे 146 वें स्थान पर जगह दी गई।

कोविड–19 और भारतीय महिलाएं

लैंगिक समानता दुनिया भर में गैर बराबरी की सबसे व्यापक समस्या रही है। कोविड–19 महामारी ने दुनिया में मौजूद तमाम सामाजिक आर्थिक असमानताओं को न सिर्फ उजागर किया है, बल्कि उन्हें और बढ़ा दिया है। इस महामारी ने महिलाओं जैसे कमजोर और हाशिए पर पड़े सामाजिक वर्गों की आर्थिक स्थिरता पर बुरा असर डाला है। महामारी का यह बुरा प्रभाव ऐसे विकासशील देशों की महिलाओं पर ज्यादा देखने को मिला है, जहां पर वो ऐसे सामाजिक सांस्कृतिक माहौल से ताल्लुक रखती है, जहाँ पर श्रमिक बाजार तक महिलाओं के पहुंचने की राह में कुदरती तौर पर बाधाएं खड़ी होती है। 2020 में भारत के श्रमिक बाजार में महिलाओं की भागीदारी घटकर 22 प्रतिशत रह गई थी। लैंगिक असमानता रिर्पोट में भारत में मजदूरी के बाजार तक महिलाओं की पहुंच ओर उनके नौकरी पर रखे जाने की संभावनाओं में स्थिति 18 फीसदी के साथ एशियाई देशों में सिर्फ पाकिस्तान और अफगानिस्तान से आगे है। संयुक्त राष्ट्र की 2020 की महिलाओं की रिपोर्ट में कहा गया कि 2021 में भारत में पुरूषों की तुलना में महिलाओं के भयंकर गरीबी में रहने की आशंका 10 प्रतिशत ज्यादा है।

अजीम प्रेमजी की स्टेट ऑफ वर्किंग इंडिया रिपोर्ट 2021 में भारत में पुरूषों और महिलाओं के लिए कामकाज के हालात पर प्रस्तुत रिपोर्ट में कहा गया कि लॉकडाउन और उसके बाद के महीनों में जहां 61 प्रतिशत पुरूष अपने रोजगार पर लगे रहे थे केवल 7 फीसदी पुरूष कामकारों की नौकरी गई थी, वहीं केवल 19 प्रतिशत कामकाजी महिलाएं अपनी रोजगार बचाने में कामयाब हो सकी थी जबकि 47 प्रतिशत कामगार महिलाओं की नौकरी हमेशा के लिए छिन गई थी। महामारी के वर्षों में जैसे–जैसे आय घटती गई महिलाओं को भोजन, स्वास्थ्य और बालिकाओं की शिक्षा से लेकर नौकरी तक हर मोर्चे पर बाधाओं का सामना करना पड़ा। देशव्यापी लॉकडाउन की मार सबसे ज्यादा स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्रा में पड़ी। 2007–08 की मंदी में जहां पुरूष कामगारों को ज्यादा प्रभावित किया, वहीं कोविड–19 के कारण महिलाओं के स्वरोजगार के विकल्प समाप्त हो गए।

अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के अध्ययन के अनुसार लॉकडाउन के बाद रोजगकार के तमाम क्षेत्रों से जुड़ी कुल श्रमशक्ति में से 47 फीसदी महिलाएं बाहर निकल गई थी। लॉकडाउन के दौरान स्थायी वेतन वाली नौकरियों में लगी सिर्फ 2 फीसदी महिलाएँ ही स्वरोजगार से जुड़ पाई थी जबकि दूसरी ओर 37 प्रतिशत पुरूष कामगारों ने स्वरोजगार अपना लिया था।

कोरोनो महामारी के कारण महिलाओं के जीवन में आये बदलाव

- इस दौरान महिलाओं पर हिंसा और शोषण में भी बढ़ोतरी हुई और मैरिटल रेप की शिकायते बढ़ी। घरेलु हिंसा, बाल विवाह, साइबर हिंसा और महिलाओं व लड़कियों की तस्करी के मामलों में वृद्धि हुई। राष्ट्रीय महिला आयोग के मुताबिक फरवरी और मई 2020 के दौरान भारत में घरेलु हिंसा के ढाई गुना मामले दर्ज किये गये।
- प्रताडना और शोषण के खिलाफ महिलाओं की मदद के लिए लखनऊ में 'सुरक्षा' नाम की संस्था चलाने वाली डॉ. स्वर्णिमा सिंह बताती है, कोरोना काल मे महिलाओं के प्रति हिंसा के दोगुने से ज्यादा मामले हमारे पास आ रहे है, इनमे आर्थिक वजह सबसे महत्वपूर्ण है। लेकिन एक महत्वपूर्ण वजह पुरूषों के गैर कानूनी संबंध भी है।

- कोरोना काल में जब सभी लोग अपने घर पर ही समय बिता रहे थे, घरेलु सहायकों को हटाने के कारण घर के काम का सारा बोझ महिलाओं पर आ गया। बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल के साथ ही बच्चों की ऑनलाइन क्लासेस में भी बच्चों के साथ माताओं की भी मेहनत रही।
- वेतन विषमता और अवैतनिक देखभाल कार्य के बोझ की वजह से ज्यादा संख्या में महिलाओं का रोजगार खत्म हो गया। महिलाएं छोटी नौकरियां ब्यूटी पार्लर जैसे छोटे बिजनेस करके घर का खर्च चलाने में मदद करती थी लेकिन कोरोना काल में बेरोजगार हो गई अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में टिकाऊ रोजगार केन्द्र की रिर्पोट बताती है वर्ष 2020 में भारत में पहली बार की गई तालाबन्दी के दौरान 47 फीसदी महिलाओं का रोजगार खत्म हो गया, जबकि पुरूषों के लिए यह आंकड़ा 7 फीसदी ही रहा। मार्च और अप्रैल 2021 में अनौपचारिक क्षेत्रों में रोजगार खत्म हो जाने के कारण 80 फीसदी ग्रामीण भारतीय महिलाएं प्रभावित हुई।
- जो महिलाएं वर्किंग थी उन्हें वर्कफ्रॉम होम मिला जिससे उनके लिए घर की जिम्मेदारियों के साथ ऑफिस के वर्क को मैनेज करना चुनौती बन गया। लगातार घर–ऑफिस के काम और पारिवारिक विवादों ने महिलाओं को तनावग्रस्त बना दिया।
- महामारी के दौरान लड़कों की तुलना में ज्यादा लड़कियां स्कूलों के दायरे से बाहर आ गई। समाज के निम्न वर्ग की स्कूली बच्चियों ने यह तक कहा कि वे निश्चित तौर पर नही कह सकती है कि वे स्कूल लौट पाएंगी।
- महिलाओं की आय में कमी के साथ ही उनके परिवारों की आय में कमी के कारण खाद्य आपूर्ति में कमी आई और महिलाओं के पोषण पर विपरित प्रभाव पड़ा।
- कोविड महामारी के दौरान महिलाओं के स्वास्थ्य स्तरों में भी गिरावट आई क्योंकि महामारी के प्रभाव में वे गर्भनिरोधक माहवारी संबंधी उत्पादों का खर्च उठा सकने में असमर्थ रही।

समाधान

जेंडर आधारित भेदभाव और हिंसा समाज में सदियों से चला आ रहा है, जिसकी जड़े जितनी पुरानी है उतनी ही मजबूत भी। शिक्षा और जागरूकता ऐसे साधन है जिनसे इस भेदभाव को चुनौती दी जा सकती है।

कहा जाता है कि औरतों का रविवार नहीं होता क्योंकि रविवार के दिन उन्हें रोजाना के घरेलू काम के अलावा बाकी परिवार वालों की खाने पीने की फरमाइशों के चलते और ज्यादा समय किचन में गुजारना पड़ता है। ऐसी स्थिति में कोरोना महामारी ने महिलाओं के काम का बोझ तिहरा कर दिया था। कोरोना महामारी के दुष्परिणामों से महिलाओं का उबारने के लिए कुछ आवश्यक प्रयास किये जाने जरूरी है क्योंकि महामारी के वर्षों में जैसे–जैसे आय घटती गई महिलाओं को भोजन, स्वास्थ्य और बालिकाओं की शिक्षा से लेकर नौकरी तक हर मोर्चे पर बाधाओं का सामना करना पड़ा।

- संयुक्त राष्ट्र महासचिव के अनुसार असुरक्षित नौकरियों में कार्यरत महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है जिनमें स्वास्थ्य बीमा, पेड सिक लीव, चाइल्डकेयर, इनकम प्रोटेक्शन, बेरोजगारी भत्ता आदि शामिल है।
- कोविड–19 की महामारी के पश्चात अर्थव्यवस्था को पुनः गति प्रदान करने के लिए जरूरी है कि महिलाओं पर विशेष ध्यान दिया जाये जिसमें आसान दरों पर ऋण, कैश ट्रांसफर, ऋण माफी आदि शामिल है।
- कम आय पर काम करने और असमान प्रतिनिधित्व से महिलाओं के हितों को तो क्षति पहुँची ही है, देशों की अर्थव्यस्थाओं पर इसके नकारात्मक परिणाम देखने को मिलें हैं इसलिए देश की अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका होनी चाहिए।
- 2020 की महामारी ने विकासशील देशों की महिलाओं को अत्यधिक प्रभावित किया। दक्षिण एशिया में महिलाएं भेदभावपूर्ण सामाजिक संरचना और रीति–रिवाजों के कारण सम्पति व आमदनी के मामले में निचले पायदान पर खड़ी थी, कोरोना महामारी ने उनको हाशिये पर धकेल दिया। इसलिए महिलाओं को संगठित और असंगठित क्षेत्रों में

अधिक आर्थिक सुरक्षा मुहैया कराये जाने की आवश्यकता है। लैंगिक रूप से संवेदनशील वित्तीय नीतियां बनाते समय सरकारें जनता को असमानता के बारे में जागरूक भी करें।

- उन व्यवसायों को सरकारें पहचान कर बढ़ावा दे जो राष्ट्रीय लैंगिक समानता स्थापित करते हैं।व्यापार में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए सार्वजनिक–निजी भागीदारी को अपनाया जाये।
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली में महामारी–संबंधी स्वच्छता उत्पादों को संयुक्त किया जाये ताकि इन आवश्यक वस्तुओं के लिए महिलाओं की आय का एक हिस्सा बच सकें।
- पहले से ही घोषित महिला योजनाओं का सही भावना से क्रियान्वयन किया जाये और स्टार्ट–अप–इंडिया को महिला उद्यमियों के लिए विस्तारित कर विकसित किया जाये।
- लैंगिक समानता के लिए एक स्वतंत्र निकाय प्राधिकरण बनाया जाये जो शिक्षा, कौशल, सुरक्षा, अनौपचारिक क्षेत्र की श्रम भागीदारी में पारदर्शिता, वेतन समानता और महिलाओं के व्यापार जैसे क्षेत्रों पर कार्य करें।
- अर्थव्यवस्था में महिलाओं की समान भागीदारी के लिए सरकार ऐसी नीतियां अपनायें जो महिलाओं के कैरियर में साधक बनें जिनमें रिटर्न–टु–कैरियर योजना, फ्लेक्सी वर्क, विशेष अवकाश, वेतन समानता, हाइब्रिड वर्किंग मॉडल शामिल है।
- महिला उद्यमियों को आसान–ऋण उपलब्ध कराये जायें ताकि लैंगिक समानता का स्तर बढ़ सके।
- मनरेगा जॉब कार्ड पर महिलाओं को सूची–बद्ध किया जाये ताकि कुल व्यक्ति–दिवसों की संख्या में वृद्धि हो सके और महिलाओं के लिए रोजगार अवसरों की मांग की पूर्ति की जा सके।
- नई योजना (एक राष्ट्र–एक राशन कार्ड में एकल/परित्यक्ता/तलाकशुदा महिलाओं को शामिल किया जायें और विशेष रूप से घरेलू कामगारों तथा अनौपचारिक श्रमिकों के लिये सामाजिक सहायता कार्यक्रमों का सृजन किया जाये।
- सरकारें महिलाओं के स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के लिए, गर्भनिरोधक उपायों, सेनेटरी पेड और पोषण सम्बन्धी जागरूकता कार्यक्रम चला सकती है।
- स्वयं सहायता समूह महिलाओं को व्यवसायों के डिजिटल रूप से चलाने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने के लिए उन्हें तकनीकी और प्रबंधकीय प्रशिक्षण प्रदान किया जायें। क्योंकि ग्रामीण महिलाओं की आजीविका तब अधिक आसान रही है जब वह किसी समूह आधारित उद्यमों से जुड़ी हुई है।
- कोरोना काल में स्वयं सहायता समूहों की उपयोगिता साबित हुई। केरल के 30,000 महिला समूहों में से अधिकांश जो सामूहिक रूप से कोविड के पहले से ही खेती कर रहे थे, इन समूहों को कम आर्थिक नुकसान हुआ, क्योंकि उनके पास कार्य के लिए समूह श्रम था। पूर्वी भारत में समूह में खेती करने वालों ने कोरोना काल में अपने आपको भोजन में सुरक्षित पाया क्योंकि उनके पास व्यक्तिगत किसानों की तुलना में अधिक खाद्यान्न की पैदावार थी।

महामारी के दौरान स्वयं सहायता समूहों की लगभग 66,000 महिला सदस्यों ने लाखों मास्क, हैंड सैनिटाइजर और सुरक्षात्मक उपकरणों का उत्पादन करके खुद को बचाया। इस तरह ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूह स्थायी आजीविका प्रदान कर सकते हैं।

निष्कर्ष

विकास के तमाम अर्थ आर्थिक विकास के इर्द–गिर्द ही निकालें जाते हैं। जब तक दुनियां की आधी आबादी हाशिए पर खड़ी हो, विकास का वास्तविक रूप सामने नहीं आ सकेगा। इसलिए समाज के विकास में प्रतिभाग कर रहे सभी व्यक्तियों के मध्य उस विकास का समावेशन भी होना जरूरी है। लैंगिक असमानता से निपटने के लिए जरूरी है कि समाज की विचारधारा को परिवर्तित किया जाए, उन पूर्वाग्रहों को खंडित किया जाए जो स्त्री और पुरूष को दो अलग दायरों में समेटने का सिर्फ इसलिए प्रयास करते हैं, जिससे पितृसत्तात्मक व्यवस्था का अस्तित्व कायम रह सके।

कोविड–19 महामारी ने विश्व की महिलाओं की प्रगति को और पीछे धकेल दिया है लेकिन हम महिलाओं के मुद्दों और अधिकारों को आगे लाकर महामारी के दुष्परिणामों को पीछे छोड़ सकते हैं। कोरोना काल में भारत सरकार ने घरेलू हिंसा से महिलाओं को बचाने के लिए शरण स्थलों और समर्थन सेवाओं को अति आवश्यक श्रेणी में सम्मिल्लित किया जो कि एक सराहनीय कदम था। महामारी की पहली और दूसरी लहरों के दौरान, भारत में 700 वन–स्टॉप संकट केन्द्र खुले रहे जिनके जरिये ऐसी महिलाओं को मदद उपलब्ध कराई गई, जो दुर्व्यवहार का शिकार हुई थी।

भारत में समाज की मानसिकता में धीरे–धीरे परिवर्तन आ रहा है जिसके फलस्वरूप महिलाओं से संबंधित मुद्दों पर गंभीरता से विमर्श किया जा रहा है। महिला योजनाओं के क्रियान्वयन से लिंगानुपात और लड़कियों के शैक्षिक नामांकन में प्रगति हुई है।इस प्रकार प्रत्येक महिला को महामारी के बुरे प्रभाव से जल्द–से–जल्द बाहर निकालने में मदद करने के लिए सरकारी योजनाओं तथा स्वयं सहायता समूह व्यवस्था के सार्वभौमिकरण और विस्तारीकरण की आवश्यकता है। इस तरह लैंगिक समानता की जारी यात्रा को विस्तारित करने के लिए आवश्यक है कि महिलाओं को पेशेवर के तौर पर ज्यादा से ज्यादा सार्वजनिक रूप से सामने लाया जाए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. महिला असमानता, द इंडियन एक्सप्रेस, अक्टूबर 2019
2. लैंगिक असमानता, द हिन्दू, दिसम्बर 2019
3. द हिंदू, अप्रैल 2020
4. पत्रिका, डाउन टू अर्थ, अप्रैल 2020
5. द हिंदू, जुलाई 2020
6. संयुक्तराष्ट्र महिला रिपोर्ट, 2020
7. दयानिधी, डाउन टू अर्थ,पत्रिका, फरवरी 2021
8. पिल्लई, राजेश्वरी राजगोपालन, ओआरएफ,अप्रैल 2021
9. सारस्वत ऋतु,जनसत्ता अप्रैल 2021
10. 'Women work more, earn less, and face greater health risks', हिन्दुस्तान टाइम्स, जुलाई 2021
11. प्रेमजी, अजीम, स्टेट ऑफ वर्किंगइंडिया रिपोर्ट, 2021
12. जिनेट एज़कोना, UNO, रिपोर्ट फ्रॉम इनसाइट्स टूएक्शन 2021
13. अरोड़ा, अवनि, ओआरएफ, जनवरी 2022
14. मौर्य,ललित, पत्रिका डाउन टू अर्थ, जुलाई 2022
15. ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स, 2022
16. विश्व असमानता रिपोर्ट, 2022

Corresponding Author
*** डा. शारदा देवी**
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान
राजकीय महाविद्यालय, लोसल, सीकर
Email-saru.sdc2001@gmail.com, Mob.-9772107743